

# डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 15, उदारवाद का उदय

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 15 है, उदारवाद का उदय।

यह चर्च के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तिथि है, और मैं इसे कक्षा और आप लोगों के लिए उल्लेख करूँगा; हमने पहले इस बारे में बात की थी कि 17वीं शताब्दी में अमेरिका में क्या हो रहा था, विशेष रूप से केकर्स नामक समूह जो मैसाचुसेट्स बे कॉलोनी में आया था।

लेकिन इस तिथि पर, 14 अक्टूबर 1656 को, केकर्स के खिलाफ एक वास्तविक कानून बनाया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि केकर्स मैसाचुसेट्स बे कॉलोनी में न आएँ। इसलिए यह चर्च के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तिथि है: 14 अक्टूबर। तो यह कई साल पहले की बात है, और फिर चीजें, निश्चित रूप से, बदल गईं।

तो, मैं बस यही कहना चाहता था। ठीक है, और जो छात्र यहाँ आए हैं, हम आपके यहाँ आने से खुश हैं, और मैंने उन्हें पहले ही बता दिया है कि वे किसी भी समय यहाँ से जा सकते हैं। इसलिए वे जब चाहें, जब चाहें आ-जा सकते हैं, कोई समस्या नहीं है।

आप लोग, बेशक, ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए बस यही अंतर है। तो, आप वहाँ हैं। तो, आप कर सकते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं।

देखिए, मुझे पता है कि यह एक छोटी सी क्लास है। यह कोई बड़ी क्लास नहीं है, इसलिए मुझे पता है कि यहाँ कौन है और कौन नहीं। तो, खैर, आज हमारे दोस्तों का स्वागत है।

आशा है कि यह एक अच्छा दिन रहा होगा। ठीक है, मैं यहाँ मौजूद हमारे मित्रों को, यहाँ मौजूद हमारे मित्रों को, बस कुछ मिनट बता दूँ कि हम इस कोर्स में कहाँ हैं, और फिर हम आगे बढ़ेंगे। हम इस व्याख्यान को समाप्त करने जा रहे हैं और फिर अगला शुरू करेंगे क्योंकि हम आज 14 अक्टूबर को सातवाँ व्याख्यान शुरू करने वाले हैं।

इसलिए, हम समय पर बने रहना चाहते हैं। लेकिन यह सुधार में वर्तमान तक का एक पाठ्यक्रम है। इसलिए, हम सुधार से शुरू करते हैं, और हम जॉन कैल्विन की नज़र से सुधार को देखते हैं, और हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि कैल्विन ने चर्च को कैसे जवाब दिया और कैसे उन्होंने प्रोटेस्टेंटवाद को आकार देने में मदद की।

और फिर हम 16वीं सदी, 17वीं सदी, 18वीं सदी और उसके बाद चर्च में जो कुछ भी हुआ, उसके बारे में बात करते हैं। हम चर्च में जो देखते हैं, वह एक पेंडुलम की तरह झूलता हुआ है। और कभी-कभी चर्च में, आप पाएंगे, व्याख्यान से पहले हम जिस व्याख्यान पर हैं, उसमें हमने चर्च

और ईसाई धर्म के लिए बहुत गंभीर आलोचना के बारे में बात की और वास्तव में कोशिश की, कुछ लोगों ने चर्च और ऐतिहासिक ईसाई धर्म को लगभग खत्म करने की कोशिश की।

लेकिन फिर एक अद्भुत बात हुई। इस व्याख्यान में हम जिसे चर्च का सुसमाचारी पुनरुत्थान कहते हैं। चर्च में एक संपूर्ण सुसमाचारी पुनरुत्थान हुआ। तो यही वह है जिसका हम अभी अध्ययन कर रहे हैं।

फिर, आज का व्याख्यान इस बात पर है कि हम उदार धर्मशास्त्र को क्या कहते हैं और कैसे उदार धर्मशास्त्र इन दोनों चीजों का एक उत्तर था। यह 17वीं और 18वीं शताब्दी में उत्पन्न हुए गंभीर संदेह का उत्तर था, लेकिन यह इंजील पुनरुत्थान का भी उत्तर था क्योंकि हर कोई उस तरह से लाइन में नहीं था। तो आप पाठ्यक्रम में पेंडुलम को आगे-पीछे और आगे-पीछे जाते हुए देख रहे हैं।

इसके अलावा, पाठ्यक्रम में कुछ स्थान हैं, क्योंकि यह वर्तमान में सुधार है, पश्चिमी यूरोप या अमेरिका में कुछ स्थान, जो गतिविधि प्रतीत होते हैं। इसलिए, आज हम जो व्याख्यान शुरू करेंगे, उसमें जर्मनी में गतिविधि की कला अन्य स्थानों को प्रभावित करेगी। ठीक है।

हालाँकि, हमने चर्च में सुसमाचारी पुनरुत्थान पर वर्तमान व्याख्यान समाप्त नहीं किया है। हम जॉन वेस्ले नामक एक व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं, और जॉन वेस्ले ब्रिटेन में चर्च के नवीनीकरण में बहुत महत्वपूर्ण थे। और अब हम उनके धर्मशास्त्र के बारे में बहुत बात कर रहे हैं, लेकिन अब हम एक ऐसे धर्मशास्त्र के बारे में बात कर रहे हैं जिसे पूर्ण प्रेम या सभी पापों से पूर्ण मुक्ति कहा जाता है।

जॉन वेस्ले ने पूर्ण प्रेम के सिद्धांत का प्रचार किया। और इसलिए हम अब यहीं हैं। हम बस इसके लिए कुछ खत्म करेंगे।

ठीक उसी दिन जब हम समापन कर रहे थे, हमने बताया कि दो थे; जॉन वेस्ले ने परिपूर्ण प्रेम के सिद्धांत का प्रचार किया क्योंकि उन्हें लगा कि बाइबल उस सिद्धांत को सिखाती है। परिपूर्ण बनो जैसे कि परमेश्वर परिपूर्ण है। अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्यार करो।

अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। उनका मानना था कि बाइबल पूर्ण प्रेम का सिद्धांत सिखाती है, जो एक तरह की ईसाई पूर्णता थी। यह मसीह में पूर्णता थी, लेकिन यह मानवीय पूर्णता नहीं थी।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम मानवीय रूप से परिपूर्ण होंगे, बल्कि मसीह में परिपूर्ण होंगे। और शायद हम सभी को एक ही लाइन पर लाने के लिए, हम क्या करते हैं, इसका एक कारण यह है कि उन्होंने इसे इसलिए पढ़ाया क्योंकि यह बाइबिल से संबंधित था, लेकिन एक कारण यह भी था कि वे इसे 18वीं शताब्दी में पढ़ाने के लिए मजबूर हुए, यही उन्होंने चर्च में पाया। उन्होंने ऐसे लोगों को पाया जिन्हें शिशुओं के रूप में चर्च में बपतिस्मा दिया गया था।

और फिर वे चर्च में होते, और वे 30, 40, 50 साल तक चर्च में होते। और उन 30, 40, 50 सालों में, उन्हें बाइबल के बारे में, मसीह में जीवन के बारे में, ईसाई गवाही के बारे में, प्रार्थना के बारे में कुछ भी नहीं पता था। उन्हें ईसाई धर्म के बारे में कुछ भी नहीं पता था।

वे अपनी पूरी ज़िंदगी चर्च में रहे हैं। और वे कहाँ हैं? यह एक सपाट रेखा है। और वेस्ली ने कहा, बेटा, यह वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए।

क्या परमेश्वर का यह इरादा है कि विश्वासी इस तरह की सपाट रेखा में रहें? नहीं, परमेश्वर का इरादा विश्वासियों के लिए ऊपर की ओर गति करना है। इसलिए उसने इन बाइबिल सिद्धांतों का प्रचार किया, जिसमें परिपूर्ण प्रेम का सिद्धांत भी शामिल है। ठीक है।

तो, हमने जाने से ठीक पहले जो कहा, हमने कहा कि इस ईसाई पूर्णता के दो परिणाम थे। तो मुझे उन्हें बताना होगा, लेकिन पहला परिणाम यह है कि वेस्ले और उनके आंदोलन ने वास्तव में एक समाज बनाया, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह दुनिया के लिए एक अच्छा उदाहरण था कि ईसाई धर्म कैसा होना चाहिए। इसलिए वह चाहते थे कि उनके लोग, उनका समाज और उनके मेथोडिस्ट एक अच्छा उदाहरण बनें और एक शुद्ध जीवन जिएं, खुद को शरीर, आत्मा की सभी गंदगी से शुद्ध करें, पूर्णता और ईश्वर के भय में पवित्रता प्राप्त करें।

इसलिए, वह एक तरह के पवित्र लोगों का निर्माण करना चाहता था। वह ऐसे लोगों का निर्माण करना चाहता था जो दुनिया से अलग हों, जो दुनिया से अलग हों, और जिन्हें पवित्र लोगों के रूप में पहचाना जा सके। और यही वह था, जिसके निर्माण के बारे में वह था।

और निश्चित रूप से, ईसाइयों को कुछ मायनों में उस दुनिया से अलग होना चाहिए जिसमें हम रहते हैं। मुझे लगता है कि वेस्ली यहाँ सही थे। तो यह ईसाई पूर्णता के सिद्धांत का एक प्रकार का विस्तार है, ऐसे लोगों का समुदाय बनाना जो इस बात के आदर्श थे कि इस दुनिया में ईसाई जीवन कैसे जिया जाना चाहिए।

इस ईसाई पूर्णता का दूसरा परिणाम गरीबों, बहिष्कृतों, बीमारों की सेवा करने वाला जीवन था, और अपने पड़ोसी की देखभाल करने वाला जीवन था। जब आज्ञा कहती है, अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्यार करो, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करो। जब उन्होंने जॉन वेस्ली से पूछा, मेरा पड़ोसी कौन है? वेस्ली ने कहा, आप में से सबसे गरीब, वही आपका पड़ोसी है।

जो लोग असहाय, बेघर हैं और जिन्हें सहायता की आवश्यकता है, वे आपके पड़ोसी हैं। वे ही हैं जिनकी आप मदद करना चाहते हैं। और इसलिए, वेस्ली ने जो किया वह वास्तव में गरीबों का पक्ष लेना और गरीबों की सेवा करना था।

अब, इसका एक उदाहरण वास्तव में जॉन वेस्ले की आखिरी तस्वीर है, जिसमें वेस्ले अपनी मृत्युशय्या पर थे। लेकिन इसका एक उदाहरण इंग्लैंड में दास व्यापार था। वेस्ले दास प्रथा के विरोधी थे क्योंकि उनका मानना था कि यह एक ऐसा तरीका है जिससे ईसाइयों को गरीबों की देखभाल करने में सक्रिय होना चाहिए।

और ब्रिटेन के समय में गरीब कौन थे? वे गुलाम थे। इंग्लैंड में गुलामी खत्म होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी, लेकिन फिर भी वे गुलामी विरोधी कार्यकर्ता थे। तो यह गरीबों की देखभाल करने का एक तरीका है।

तो, सबसे पहले, आपको ऐसे लोगों का एक समुदाय बनाना चाहिए जो आदर्श हों, और दूसरा, सुनिश्चित करें कि वह समुदाय आपके पड़ोसी और गरीबों से प्रेम करता हो। और फिर हमारे पास कुछ समापन टिप्पणियाँ हैं, और हम उन्हें करेंगे, और फिर हम अगले व्याख्यान पर जा सकेंगे। समापन टिप्पणियों के माध्यम से, आप जानते हैं कि आप एक महान धर्मशास्त्री को देख रहे हैं जब वह धर्मशास्त्री अपने स्वयं के धर्मशास्त्र के खतरों से अवगत है।

और यह जॉन वेस्ले के लिए सच था। जॉन वेस्ले इस बात से बहुत अवगत थे कि उन्होंने जो उपदेश दिया और सिखाया, अगर उसे गलत समझा गया, तो यह खराब धर्मशास्त्र की ओर ले जा सकता है। और इसलिए वह हमेशा इसके प्रति सचेत रहते थे।

और वह चाहता था, खास तौर पर अपने पवित्रीकरण के सिद्धांत के साथ, यह सुनिश्चित करना कि लोग समझें कि यहाँ क्या खतरे थे। अब, यही महान धर्मशास्त्री और उस व्यक्ति के बीच का अंतर है जो सोचता है कि भगवान ने आज सुबह आपसे बात की, और मैं आज रात आपसे बात कर रहा हूँ, आप जानते हैं। और जॉन वेस्ली खतरों से अवगत थे, खास तौर पर परफेक्ट लव के सिद्धांत में।

तो मैं तीन बातें बताना चाहता हूँ जो उन्होंने बताई और वे चाहते थे कि लोग उनके सभी सिद्धांतों पर विचार करते समय बहुत सावधानी से विचार करें, लेकिन विशेष रूप से पवित्रीकरण के सिद्धांत पर। तो, नंबर एक हमेशा वेस्ली के लिए था। यह हमेशा गर्व का खतरा था। किसी धार्मिक अनुभव में गर्व जो आपके पास है।

जॉन वेस्ले के मामले में, उन्होंने लोगों के लिए पूर्ण प्रेम की बात की। लेकिन आपके धार्मिक अनुभव में गर्व का खतरा आपको यह विश्वास दिलाता है कि आप अन्य ईसाइयों से बेहतर हैं, आप जानते हैं। वेस्ले इस बात से बहुत घबराए हुए थे।

घमंडी मत बनो। अगर कोई धार्मिक अनुभव आपको घमंड की स्थिति में ले जाता है, तो आपको पता होना चाहिए कि यह ईश्वर की ओर से नहीं है। तो यह आपकी ओर से है।

और इसलिए यह नंबर एक है। नंबर दो, दूसरी बात जो वह हमेशा अपने सभी धर्मशास्त्रों के लिए जानते थे, लेकिन विशेष रूप से इस विशेष सिद्धांत के लिए, ईसाई पूर्णता की ओर काम करने के जाल में पड़ना, ईश्वर की संतान बनने की कोशिश करना जो वह चाहता है, लगभग कर्मों द्वारा उद्धार। आपको इससे सावधान रहना होगा क्योंकि, जैसा कि वेस्ले ने लोगों को याद दिलाया, यह ईश्वर का कार्य है।

यह तुम्हारा काम नहीं है। यह ईश्वर की कृपा है कि तुम ईश्वर की संतान हो। तुम ईश्वर की संतान अपनी मेहनत के कारण नहीं हो, जो तुम करते हो, तुम जानते हो, अपने दाँत पीसते हो और अपनी मुट्ठियाँ भींचते हो।

आप ईश्वर की कृपा से ईश्वर की संतान हैं। और यहां तक कि आप जो भी अच्छा विश्वास लाते हैं, यहां तक कि आप जो भी अच्छा काम करते हैं, जो भी आप ईश्वर के साथ अपने इस अद्भुत रिश्ते में लाते हैं, वह सब वैसे भी ईश्वर की कृपा से ही आता है। तो, शुरू से लेकर अंत तक सब कुछ ईश्वर की कृपा से ही होता है।

इसलिए ईसाई धर्म में पड़ने से सावधान रहें जहाँ आप अपने दाँत पीस रहे हैं, अपनी मुट्ठियाँ भींच रहे हैं, और किसी तरह के धार्मिक अनुभव के लिए काम करने की कोशिश कर रहे हैं, आप जानते हैं। वेस्ली इस बारे में बहुत घबराया हुआ था। यह भगवान का काम था, हमारा काम नहीं।

यह ईश्वर की कृपा से है, हमारी कृपा से नहीं, हमारे काम से नहीं। इसलिए, वह इस बारे में सावधान थे। और तीसरी बात यह है कि वह एक तरह से समापन टिप्पणी है, लेकिन जब आप एक सिद्धांत पर जोर दे रहे हों तो सावधान रहें।

उन्होंने पूर्ण प्रेम पर जोर दिया। लेकिन अन्य सिद्धांतों के महत्व को नकारने से सावधान रहें। इसलिए हमेशा सिद्धांत की अपनी समझ को अन्य सिद्धांतों, अन्य बाइबिल सिद्धांतों के संदर्भ में रखें।

इसलिए, उनके मामले में, उदाहरण के लिए, वे पूर्ण प्रेम में विश्वास करते थे, लेकिन उन्होंने विश्वास द्वारा औचित्य के सिद्धांत को अस्वीकार नहीं किया, जो सुधारकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वे विश्वास द्वारा औचित्य के बारे में बहुत बात करते हैं। इसलिए सावधान रहें कि आप इतने अदूरदर्शी न बनें कि आप केवल एक सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित करें, और फिर अन्य सभी सिद्धांत कहीं गायब हो जाएं।

यदि आप किसी विशेष सिद्धांत पर जोर दे रहे हैं, तो इसे चर्च के सभी सिद्धांतों, चर्च की सभी शिक्षाओं के संदर्भ में करें। इसलिए, वेस्ले इस पर बहुत, बहुत मजबूत थे, और वह यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उनकी बात, उदाहरण के लिए, पूर्ण प्रेम के बारे में, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में हो। ठीक है, तो हम यहीं हैं।

तो चलिए, हाँ, कुछ सवाल लेते हैं, और फिर हम आगे बढ़ेंगे। हाँ, वह घुमक्कड़ था। वह घुमक्कड़ था।

और फिर, घोड़े पर 250,000 मील की यात्रा, एक मिनट भी बर्बाद न करने के लिए। यही कारण है कि उसने इसे काठी पर रखा था। जॉन वेस्ले 18वीं सदी में थे, लेकिन घोड़े की काठी पर, उन्होंने एक छोटा सा मंच बनवाया था, एक छोटा मंच नहीं, बल्कि एक छोटी सी डेस्क।

वह इसे काठी पर ठीक से रख सकता था। डेस्क खुल गई और उसके पास किताबें थीं और उसने अपनी ग्रीक भाषा का अध्ययन किया और पत्र लिखे। इसलिए, वह वास्तव में प्रथम श्रेणी का पुनरुत्थानवादी था।

और फिर उन्होंने जो किया, क्योंकि, ज़ाहिर है, वे सभी क्षेत्रों को कवर नहीं कर सकते थे, उन्होंने उन लोगों को नियुक्त किया जिन्हें वे आम प्रचारक कहते थे। इसलिए जैसे-जैसे लोग धर्मांतरित होते गए, या लोग अच्छे एंग्लिकन के रूप में मेथोडिज्म में आए जो एंग्लिकन चर्च में रहना चाहते थे, लेकिन हम एंग्लिकन को जीवंत बनाने के लिए आपके मेथोडिस्ट आंदोलन में शामिल होना चाहते हैं, उन्होंने बहुत से आम प्रचारकों को नियुक्त किया, और उन्होंने वही काम किया। वे पूरे इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स और आयरलैंड में फैल रहे हैं, प्रचार कर रहे हैं, पढ़ा रहे हैं, और इसी तरह के काम कर रहे हैं।

उनके लिए यह बहुत कठिन जीवन था। वे अक्सर बैठकों और वार्षिक सम्मेलनों में एक साथ आते थे। पहला भजन जो वे गाते थे वह चार्ल्स वेस्ले द्वारा उनके वार्षिक सम्मेलन के लिए लिखा गया भजन था।

वैसे, चार्ल्स वेस्ले ने 6,000 से ज़्यादा भजन लिखे हैं। तो यह बहुत सारे भजन हैं। उन्होंने अपने वयस्क जीवन में एक दिन में एक भजन लिखा।

और उन्होंने एक भजन लिखा। और भजन की पहली पंक्ति थी, क्या हम अभी भी जीवित हैं और एक दूसरे का चेहरा देख सकते हैं? सच तो यह है कि इनमें से बहुत से घुमक्कड़ प्रचारक अपनी यात्रा के दौरान ही मर गए। वे बीमारी से मर गए।

वे कभी-कभी चोरों और लुटेरों के कारण मर जाते थे। वे बस थके होने और हर चीज़ के कारण मर जाते थे। इसलिए वे एक साथ मिलते थे, और वे गाते थे, क्या हम अभी भी जीवित हैं और एक-दूसरे का चेहरा देखते हैं? और यहाँ हम हैं; हम जीवित हैं, और हम एक-दूसरे के चेहरे देखते हैं।

हम एक और कठिन यात्रा वर्ष के लिए तैयार हो रहे हैं। तो उन्होंने ऐसा ही किया। फ्रांसिस एस्बरी ने भी इस देश में यही किया।

यह एक कठिन जीवन था। हाँ। कुछ और, वेस्ली के बारे में मेरे अपने लोगों से कुछ और, और आप लोगों के पास आप हैं।

हाँ. हाँ. सही.

सही है। वह कह रहा है कि आप मानवीय रूप से परिपूर्ण नहीं हो सकते। परिपूर्ण प्रेम मानवीय पूर्णता नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि मेरे पास संपूर्ण ज्ञान नहीं है। इसलिए, यह मानवीय पूर्णता नहीं है। यह मसीह में पूर्णता है।

इसलिए, अगर वेस्ली ने सिखाया कि जो कुछ हुआ है वह विश्वासियों के लिए है, तो मसीह आप में है। और क्योंकि मसीह आप में है, आप मसीह की छवि धारण करते हैं, और आप दिन-प्रतिदिन परमेश्वर की कृपा में बढ़ते हैं। और इन सब के कारण, आप मसीह में परिपूर्ण हो रहे हैं।

आप पूर्ण प्रेम प्राप्त कर रहे हैं। और फिर वेस्ली कहते, क्या आप किसी स्थान पर पहुँचते हैं? क्या ईसाइयों के लिए अपने जीवन में ऐसी जगह पर पहुँचना संभव है जहाँ वे अपने प्रभु, अपने ईश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्यार करते हैं, और अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्यार करते हैं? क्या यह संभव है? और वेस्ली ने कहा, हाँ, हमें कहना चाहिए कि यह संभव है। अन्यथा, यीशु ने एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया होता जिसका इस जीवन में पालन करना असंभव था।

तो, मुझे नहीं पता। क्या इससे थोड़ी मदद मिलती है? तो, पूर्ण प्रेम पवित्रता है। तो, इस जीवन में, है न? उनका मानना था कि यीशु का मतलब किसी दूसरे जीवन के लिए नहीं था, बल्कि उनका मतलब इसी जीवन के लिए था। और फिर, पहाड़ी उपदेश में, जब यीशु कहते हैं, जैसे परमेश्वर पूर्ण है, वैसे ही पूर्ण बनो, वेस्ली का मानना था कि यीशु का मतलब इसी जीवन के लिए था, उनका मतलब किसी अगले जीवन के लिए नहीं था, बल्कि उनका मतलब इसी जीवन के लिए था।

तो, वह जो कर रहा है वह यह है कि वह इस जीवन में पवित्रीकरण के सिद्धांत को ला रहा है। कैल्विन और लूथर ने बारी-बारी से पवित्रीकरण के बारे में बात की। इसकी शुरुआत यहीं से हुई, लेकिन आप इसे मृत्यु के बाद स्वर्ग जाने तक पूरा होते नहीं देख पाएंगे, इत्यादि।

इसलिए, वेस्ली इसे इस जीवन में लाने की कोशिश करता है। लेकिन आकर्षण का एक हिस्सा यह था कि मैं ऐसे चर्च से संबंधित नहीं होना चाहता, जहाँ 40 साल बाद, चर्च के लोग यह भी नहीं जानते होंगे कि जॉन के सुसमाचार की ओर कैसे मुड़ना है या प्रार्थना कैसे करनी है या अपने पड़ोसी और अन्य चीज़ों के लिए पुजारी कैसे बनना है। यह उस तरह का चर्च नहीं है, ऐसा लगता है कि इसमें ऊपर की ओर गति होनी चाहिए।

तो, कम से कम, वेस्ली उस चर्च को जीवंत करना चाहता था। हाँ। क्या इससे थोड़ी मदद मिलती है? यहाँ और कुछ है? हाँ, कृपया।

आपको यह सोचकर ऐसा नहीं करना चाहिए कि यह आपकी अपनी योग्यता है जो आपको अपने पड़ोसी के प्रति ये अच्छे काम करने के लिए प्रेरित कर रही है। आप परमेश्वर से और अपने पड़ोसी से प्रेम करने में सक्षम हैं, इसका एकमात्र कारण परमेश्वर की कृपा है। इसलिए, उन अच्छे कामों को करके, आप अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा से ऐसा कर रहे हैं, जिससे आप अपने पड़ोसी से प्रेम कर पा रहे हैं।

तो, खतरा यह होगा, और उन्होंने रिफॉर्मेशन में भी इस पर लड़ाई लड़ी, हमने रिफॉर्मेशन में इस बारे में बात की, खतरा यह होगा कि अगर आपको लगता है कि आपके अच्छे काम किसी तरह भगवान के सामने आपको स्वीकार करेंगे, और वह आपको पसंद करेंगे क्योंकि आप ये अच्छे काम कर रहे हैं। यही खतरा होगा। वेस्ली इससे दूर रहना चाहता है।

अच्छे काम मसीह की आज्ञा का पालन करने का परिणाम हैं कि अपने पड़ोसी से प्रेम करो। और ऐसा करने का एकमात्र तरीका ईश्वर की कृपा है। केवल ईश्वर की कृपा ही हमें ऐसा करने की अनुमति देती है।

क्या इससे मदद मिलती है? यहाँ कुछ और है? ठीक है। तो, क्या इस व्याख्यान के बारे में मेरे उन दोस्तों के लिए कुछ और है जिन्होंने वेस्ले पर व्याख्यान पढ़ा है? आप जानते हैं, मेरे छात्र, वे इस बारे में बहुत अच्छे हैं क्योंकि मैं वेस्ले के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ। इसलिए मैंने उन्हें वेस्ले के बारे में बहुत सी बातें बताईं।

तो यह अच्छी बात है, है न? क्या हम इस बात पर खुश नहीं हैं? ठीक है। भगवान आपका भला करे। ठीक है।

पाठ्यक्रम का पृष्ठ 13. हमारे पास कक्षा में एक पाठ्यक्रम है जिसका हम उपयोग करते हैं और हम उस पाठ्यक्रम में एक रूपरेखा देते हैं। तो इस तरह से हम पाठ्यक्रम के माध्यम से आगे बढ़ते हैं।

ठीक है। तो अब, पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 पर, क्षमा करें, पृष्ठ 14 पर। और हमारा अगला व्याख्यान है उदार धर्मशास्त्र का उद्भव और विकास।

उदार धर्मशास्त्र का उद्भव और विकास। और इस व्याख्यान में हम जो करने जा रहे हैं, वह यह है कि मेरे अपने लोगों के लिए पेंडुलम को फिर से थोड़ा सा झूलते हुए देखना है, जो उस कल्पना के आदी हैं। और व्याख्यान में हम चार बातें करेंगे।

तो, मैं यह बात सिर्फ़ उन लोगों के लिए कह रहा हूँ जो हमारे साथ हैं और जिनके पास पाठ्यक्रम नहीं है। हम कुछ पृष्ठभूमि सामग्री देने जा रहे हैं। फिर, हम उदारवाद कहे जाने वाले विषय के कुछ बुनियादी धार्मिक निष्कर्ष देने जा रहे हैं।

और फिर, हम प्रोटेस्टेंट उदारवाद, इसकी ताकतों, और फिर प्रोटेस्टेंट उदारवाद, इस परंपरा की कमजोरियों का मूल्यांकन करने जा रहे हैं। तो, उदार धर्मशास्त्र के उद्भव और विकास में, हम पृष्ठभूमि से शुरू करते हैं, जो काफी लंबी है।

तो इस सब की पृष्ठभूमि के संदर्भ में पहली बात यह है कि जिसे हम उदार धर्मशास्त्र कहते हैं, वह जर्मनी में उभरा। तो जर्मनी वास्तव में पहला स्थान बन गया है जहाँ इस चीज़ के संकेत दिखाई देते हैं जिसे हम उदार धर्मशास्त्र कहते हैं। तो इसकी शुरुआत जर्मनी से होती है।

अब, अगर आप 17वीं और 18वीं सदी के जर्मनी को देखें, तो तीन विशेषताएं हैं जो 19वीं सदी में भी मौजूद हैं। इसलिए मैं जर्मनी में जीवन की उन तीन विशेषताओं का उल्लेख करना चाहता हूँ जो 19वीं सदी में भी मौजूद रहीं। ठीक है।

नंबर एक था लूथरन स्कोलास्टिसिज्म। लूथरन स्कोलास्टिसिज्म ने 17वीं और 18वीं सदी में अपनी पकड़ बनाई, और 19वीं सदी में भी लूथरन स्कोलास्टिसिज्म का एक अवशेष मौजूद है। ठीक है।

अब, लूथरन स्कोलास्टिसिज़्म के अनुसार, हमारा मतलब है जीवन से रहित सिद्धांत। हमारा मतलब है कि जो लोग चर्च के सिद्धांतों को जानते थे, जो चर्च के सिद्धांतों को जानते थे, लेकिन उन सिद्धांतों या सिद्धांतों में कोई जीवन नहीं था। उन सिद्धांतों का प्रचार करने या सिखाने के लिए कोई कल्पना या रचनात्मकता नहीं थी।

तो यही बात है जिसके बारे में हमने पाठ्यक्रम में बात की है। तो, लूथरन विद्वत्तावाद 19वीं सदी में भी अपना रास्ता बनाने जा रहा है। तो यह एक बात है।

ठीक है। दूसरी बात, और यह पिछले व्याख्यान से नहीं, बल्कि उससे पहले के व्याख्यान से आती है, लेकिन यह 19वीं सदी में भी प्रासंगिक रहेगी और यह एक गैर-धार्मिक तर्कवाद है, एक गैर-धार्मिक तर्कवाद। यह 19वीं सदी में भी अपना रास्ता बनाएगा।

तो यह चर्च पर जोर न देने, ईसाई सिद्धांत पर जोर न देने, बाइबिल पर जोर न देने, जीसस पर जोर न देने, इत्यादि और लोगों की तर्क करने की क्षमता और धार्मिक क्षेत्रों में भी अपने तर्क और तर्कसंगतता का उपयोग करने में उच्च विश्वास है। तो, एक गैर-धार्मिक प्रकार का तर्कवाद 19वीं सदी में अपना रास्ता बनाता है। तो यह नंबर दो है।

ठीक है। नंबर तीन, तीसरी चीज़ जो 19वीं सदी में आगे बढ़ने वाली थी, वह एक आंदोलन था जिसे हम पिएटिज्म कहते हैं। पिएटिज्म 19वीं सदी में भी मौजूद रहेगा।

पीटिज्म एक ऐसा आंदोलन था जो विद्वत्तावाद और तर्कहीनता का प्रतिकार करता था। पीटिज्म एक ऐसा आंदोलन था जो दिमाग और दिल दोनों को जोड़ता था। तो, पीटिज्म एक जर्मन आंदोलन था जो कहता था कि एक सच्चा आस्तिक होने के लिए, आपको अपने दिमाग से भगवान से प्यार करना चाहिए, लेकिन साथ ही आपको अपने दिल से भी भगवान से प्यार करना चाहिए।

यही वह है जो आपके जीवन में ईश्वर से प्रेम करने के सिद्धांत को जीवंत बनाता है। इसलिए जिसे हम धर्मनिष्ठता कहते हैं, वह 19वीं सदी में भी आगे बढ़ता है। इसलिए ये तीनों आंदोलन 19वीं सदी के जर्मनी में आ रहे हैं, और वे सभी एक दूसरे से टकरा रहे हैं।

और जो लोग एक या दूसरे पर विश्वास करते हैं, वे एक दूसरे से बात कर रहे हैं और एक दूसरे से सहमत हैं और एक दूसरे से असहमत हैं और इसी तरह की अन्य बातें। तो यहाँ 19वीं सदी के जर्मनी में एक बहुत बड़ी तरह की कड़ाही चल रही है। तो, ठीक है, अब क्या होता है, और हम इस बारे में उन लोगों के लिए पाठ्यक्रम में बात करते हैं जो आज हमारे साथ हैं, लेकिन जो होता है वह यह है कि आपको सही समय पर सही विचारों के साथ सही व्यक्ति मिलता है, और धर्मशास्त्र एक तरह से विस्फोट हो जाता है।

और उदार धर्मशास्त्र के साथ भी यही हुआ। हमें सही समय पर सही विचार वाला सही व्यक्ति मिला। और इसलिए हम उसका नाम बताने जा रहे हैं।

अब, यहाँ एक और नाम है जिसे मैं पसंद करूँगा। मेरा नाम बहुत आम है, लेकिन मैं पूछने जा रहा हूँ, और मैं वोट करने जा रहा हूँ। मैं, आप जानते हैं, हमेशा GE दिवस पर इस पर व्याख्यान नहीं देता, लेकिन मैं आप लोगों से भी पूछूँगा।

लेकिन अगर मेरे अपने लोगों में से किसी ने कभी इस नाम के बारे में सुना है, तो क्या यह ऐसा नाम है जिसे आपने सुना है? और शायद ऐसा नहीं है, लेकिन वह धर्मसुधार से लेकर वर्तमान तक धर्मशास्त्र में बहुत महत्वपूर्ण थे। और उनका नाम है फ्रेडरिक श्लेयरमाकर। फ्रेडरिक श्लेयरमाकर।

क्या आपमें से कुछ लोगों ने इस नाम के बारे में सुना है? आपने इसे किसी दूसरे कोर्स में पढ़ा होगा, या शायद पढ़ा होगा। ठीक है, जेसी, यहाँ आओ। फ्रेडरिक श्लेयरमाकर, 1768 से 1834 तक।

और फ्रेडरिक श्लेयरमाकर भी आ गए। और अगर आप उनका नाम लिखना चाहते हैं, तो यह सही है, मुझे उम्मीद है कि यह फ्रेडरिक श्लेयरमाकर है। यह नाम लिखना थोड़ा मुश्किल है।

उसके नाम के बाद के शब्द की चिंता मत करो। मैं उस पर वापस आऊँगा, इसलिए उसके बारे में चिंता मत करो। लेकिन फ्रेडरिक श्लेयरमाकर।

ठीक है, और मैं तुम्हें उसकी तस्वीर दिखाता हूँ। यह उसकी तस्वीर है। मुझे खेद है।

यह उनकी तस्वीर है। यह फ्रेडरिक की युवावस्था की तस्वीर है। वे 1834 तक जीवित रहे।

तो, चलिए यहाँ उनके नाम पर वापस आते हैं, फ्रेडरिक श्लेयरमाकर। क्या किसी ने, ठीक है, जेसी ने उनके नाम के बारे में सुना है। मेरे परिवार के किसी और सदस्य ने, क्या यह नाम आपको किसी दूसरे कोर्स में मिला है? फ्रेडरिक श्लेयरमाकर।

ठीक है, ठीक है, हाँ। लेकिन यह आपके जैसा नाम नहीं है; सभी ने कैल्विन, लूथर या वेस्ले के बारे में सुना होगा। यह कोई रोज़मर्रा का नाम नहीं है, इसलिए।

लेकिन फ्रेडरिक श्लेयरमाकर, उन्हें बुलाया जाता है, उनके साथ एक लेबल जुड़ा हुआ है। उन्हें उदार धर्मशास्त्र का जनक कहा जाता है। यही वह लेबल है जो फ्रेडरिक श्लेयरमाकर से जुड़ा हुआ है।

अब, क्या हुआ? वह इतना महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि वह उदार धर्मशास्त्र नामक इस चीज़ को विकसित करने वाले सबसे मौलिक धर्मशास्त्री हैं। वह जॉन कैल्विन के बाद सबसे मौलिक धर्मशास्त्री हैं। इसलिए वह धर्मशास्त्र के इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, फ्रेडरिक श्लेयरमाकर।

अब, मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि वह कितने महत्वपूर्ण हैं। 20वीं सदी के सबसे महान धर्मशास्त्री कार्ल बार्थ थे, बार्थ, और हम इस कोर्स में कार्ल बार्थ पर व्याख्यान देने जा रहे हैं। लेकिन वह 20वीं सदी के सबसे महान धर्मशास्त्री थे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

उन्हें दूसरा ऑगस्टीन, कार्ल बार्थ कहा जाता था। कार्ल बार्थ जर्मनी और स्विटजरलैंड में पढ़ाते थे। और जब उन्होंने पीएचडी छात्रों और अन्य लोगों के लिए धर्मशास्त्रीय सेमिनार आयोजित किए, तो उन्होंने कहा कि अगर आप आधुनिक धर्मशास्त्र को समझना चाहते हैं, तो आपको इस सेमिनार के लिए दो लोगों को पढ़ना होगा।

और अगर आप इन दो लोगों को नहीं पढ़ेंगे और इन दो लोगों को नहीं समझेंगे, तो आप अच्छा नहीं कर पाएँगे। आप आधुनिक धर्मशास्त्र को समझने में सक्षम नहीं होंगे। ठीक है? उनमें से एक जॉन कैल्विन थे।

उन्होंने कहा कि हमें पढ़ना चाहिए। हमें कैल्विन का अध्ययन करना चाहिए। और दूसरे थे फ्रेडरिक श्लेयरमाकर। उन्होंने कहा कि अगर आप फ्रेडरिक श्लेयरमाकर को नहीं पढ़ेंगे और उनका अध्ययन नहीं करेंगे, तो आप आधुनिक धर्मशास्त्र को नहीं समझ पाएँगे।

आपको उन दो लोगों को जानना होगा। वे महत्वपूर्ण हैं। और यही कारण है कि फ्रेडरिक श्लेयरमाकर कार्ल बार्थ के लिए कितने महत्वपूर्ण थे।

आधुनिक धर्मशास्त्र ने एक अलग दिशा ले ली होती अगर फ्रेडरिक श्लेयरमाकर न होते। तो, उदार धर्मशास्त्र के ये पिता। तो वे कितने आलोचनात्मक थे।

तो अब मैं श्लेयरमाकर के बारे में क्या कहना चाहूँगा, और फिर हम उनकी एक किताब का ज़िक्र करना चाहेंगे। लेकिन मैं श्लेयरमाकर के बारे में जो कहना चाहूँगा वह यह है कि तीन तरह के प्रभाव थे जो उनके जीवन में आए और उन्होंने उनके जीवन को आकार दिया। और अगर आप उन तीन प्रभावों को नहीं समझते जिन्होंने उन्हें आकार दिया, तो आप उनके जीवन को नहीं समझ पाएँगे।

तो मैं तीन बातें, एक तरह से तीन पहलूओं का ज़िक्र करना चाहूँगा। सबसे पहले था धर्मपरायणता। श्लेयरमाकर का पालन-पोषण जर्मन धर्मपरायणता में हुआ था।

तो, वह धर्म-परायणता के बारे में जानता था। वह धर्म-परायणता के बारे में सब कुछ जानता था। वह मन के जीवन और हृदय के जीवन के बारे में जानता था जिसका धर्म-परायणतावादियों ने समर्थन किया था।

तो, वह इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे। तो यही एक चीज़ है जिसने उन्हें आकार दिया। दूसरी चीज़ जिसने उन्हें आकार दिया वह था जर्मन बुद्धिवाद।

और, बेशक, वह एक महान छात्र, एक महान दिमाग, और इसी तरह के अन्य गुण थे, लेकिन निश्चित रूप से जर्मन बुद्धिवाद ने उन्हें आकार दिया था। और सवाल यह है कि क्या यह उनके

धर्मनिष्ठता के साथ टकराव में आता है? कभी नहीं, लेकिन हम देखेंगे। तीसरी चीज जिसने उन्हें आकार दिया वह बढ़ती रोमांटिकता थी।

मेरा मतलब है, पश्चिमी यूरोप में अगली तरह की महान सांस्कृतिक गतिविधि रोमांटिकवाद होगी, जो एक आंदोलन की तरह अधिक है, तर्कसंगतता का आंदोलन कम है, और दिल, भावना, और इसी तरह की अन्य चीजों का आंदोलन अधिक है। इसलिए, वह रोमांटिकवाद से आकार लेता है, और शायद उसने रोमांटिकवाद को आकार देने में मदद की। शायद यह चक्रीय है।

तो ये तीन चीज़ें हैं। ये तीनों चीज़ें उसके बड़े होने के सालों, उसके विकास के सालों और उसके विश्वविद्यालय के सालों में एक साथ आईं। उन्होंने फ्रेडरिक श्लेयरमाकर के धर्मशास्त्र, सोच और जीवन को आकार दिया।

उन्होंने फ्रेडरिक श्लेयरमेकर के जीवन को आकार दिया और इसलिए, उनके धर्मशास्त्र और उनकी शिक्षा और सब कुछ। अब, फ्रेडरिक श्लेयरमेकर दृश्य पर आते हैं, और वे बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं, मुख्य रूप से उनकी एक महान पुस्तक के लेखन के माध्यम से। ठीक है।

फ्रेडरिक श्लेयरमेकर की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है ऑन रिलिजन, स्पीचेस टू इट्स कल्चर डेस्पाइजर्स। तो, यह एक ऐसी पुस्तक थी, श्लेयरमेकर, एक तरह से, धर्म के संस्कृति के तिरस्कार करने वालों के खिलाफ ईसाई धर्म का बचाव करती है। यानी उच्च वर्ग के लोग जो चर्च या धर्म या ईसाई धर्म या यीशु से कोई लेना-देना नहीं चाहते थे।

और श्लेयरमाकर ने फैसला किया कि मैं उन लोगों को संबोधित करने की कोशिश करूँगा। मैं उन लोगों से ईसाई धर्म के बारे में इस तरह से बात करने की कोशिश करूँगा जो उनके लिए समझ में आए, इस तरह से कि वे ईसाई धर्म की ओर आकर्षित हों। अब, यह चर्च के इतिहास की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक है, धर्म के प्रति अपनी संस्कृति के प्रति घृणा करने वालों के लिए भाषण।

तो यह किताब वाकई बहुत मशहूर है और बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह एक तरह से ब्लॉकबस्टर किताब थी, आप जानते हैं, हर कोई इसे ईसाई किताबों की दुकान से खरीदता है, जो उन दिनों नहीं थी, लेकिन यह एक तरह की ब्लॉकबस्टर किताब थी। तो, ठीक है, अब, जब भी मुझे खेद है, लेकिन जब भी मैं श्लेयरमेकर के बारे में बात करता हूँ, तो मुझे हमेशा एक उपदेश की तरह महसूस होता है।

तो आज, मैं अपने विद्यार्थियों के लिए एक छोटा सा उपदेश देने जा रहा हूँ। तो अपने दिलों को आशीर्वाद दें। आप भी यहाँ हैं।

आप धर्मोपदेश सुनने जा रहे हैं। तो यहाँ मेरा धर्मोपदेश है, जिसमें श्लेयरमाकर का उदाहरण दिया गया है। यहाँ मेरा धर्मोपदेश है।

आप में से कुछ लोगों को, आपके व्यवसाय में, गरीबों, बहिष्कृत लोगों, इस दुनिया के गरीबों, इस दुनिया के जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए बुलाया जाएगा, और यह एक सुंदर सेवा है, और यह एक व्यवसाय है, यह एक आह्वान है, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन आप जानते हैं कि श्लेयरमेकर हमें क्या बताता है? यह हमें याद दिलाता है कि कुछ ईसाइयों को ऊंचे और पिछड़े लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया जाता है। कुछ ईसाइयों को धनी, प्रभावशाली और धर्म के सांस्कृतिक तिरस्कार करने वालों की सेवा करने के लिए बुलाया जाता है, लेकिन धन, प्रभाव और शक्ति वाले लोग।

और कुछ ईसाइयों को उनके व्यवसाय के कारण उन लोगों की सेवा करने के लिए भी बुलाया जाता है। और यह आप में से कुछ के लिए सच हो सकता है। आप में से कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें धनी, प्रभावशाली लोगों, सांस्कृतिक परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया जा रहा है, और उन्हें ईसाई धर्म की सच्चाई, ईसाई संदेश के बारे में समझाने के लिए बुलाया जा रहा है।

यह एक शानदार काम है। तो चलिए, मैं हमेशा ऐसा करता हूँ, इसलिए मैं ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मेरे पास GE के छात्र हैं, लेकिन फिर भी, मैं सिर्फ एक उदाहरण देना चाहूँगा। मैंने पहले एक GE छात्र से दूसरी कक्षा में बात की थी जब मैं कक्षा समाप्त कर रहा था, और वह आया, लेकिन वह यहाँ गॉर्डन में संगीत और ब्रास इंस्ट्रूमेंट वगैरह में प्रमुख बनने जा रहा था।

और मैंने उनसे अपने एक मित्र का जिक्र किया, क्योंकि हमारे एक पारिवारिक मित्र, हमने उन्हें कई सालों से नहीं देखा है, इसलिए यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे हम हर रोज़ देखते हैं, लेकिन हमारे एक पारिवारिक मित्र का नाम फिल स्मिथ है। फिल स्मिथ न्यूयॉर्क फिलहारमोनिक के प्रमुख ट्रम्पेट हैं। इसलिए, फिल स्मिथ, जैसा कि उन्हें कहा जाता है, दुनिया के सबसे अच्छे ट्रम्पेटर हैं।

विंस्टन मारसालिस, जैसा कि आप में से कुछ लोग उन्हें जानते होंगे, शायद उन्हें टेलीविज़न और अन्य जगहों पर देखते होंगे; खैर, वे फिल स्मिथ से शिक्षा लेते हैं। तो यह आपको थोड़ा-बहुत बताता है कि फिल स्मिथ कितने महत्वपूर्ण हैं। अब, फिल के बारे में एक शानदार बात यह है कि फिल एक बेहतरीन ईसाई हैं, एक खूबसूरत ईसाई, और अपने पूरे जीवन में, वे किसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं? वे दुनिया के महान संगीतकारों, दुनिया के महान कंडक्टरों, दुनिया के महान गायकों, और इसी तरह के अन्य लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं।

यही उसका जीवन है, यही वह करता है, यही वह है जिसके साथ वह हर दिन रहता है। और वह अपने जीवन में हर दिन उन लोगों के लिए एक अद्भुत ईसाई गवाही लाता है। वह धनी लोगों, प्रभावशाली लोगों की सेवा कर रहा है।

वह संगीत और अन्य क्षेत्रों में इस दुनिया के सुसंस्कृत लोगों की सेवा कर रहे हैं। इसलिए उनका मंत्रालय अद्भुत है। लेकिन एक कारण यह है कि वे उनका इतना सम्मान करते हैं क्योंकि वे जो करते हैं, उसमें वे बहुत महान हैं।

वह जो करता है वह प्रथम श्रेणी का है। वह दुनिया का सबसे महान तुरही वादक है। वैसे भी, हम फ्रेडरिक से सीख सकते हैं।

फ्रेडरिक ने अपने जीवन में यह निर्णय लिया कि मैं श्रेष्ठ और पिछड़े लोगों की सेवा करूंगा। मैं सभ्य और तिरस्कार करने वालों की सेवा करूंगा। इसलिए उन्होंने कल्चर डेस्पाइजेस ऑफ रिलीजन नामक पुस्तक लिखी।

तो ठीक है, अब मैं इस किताब के बारे में सिर्फ़ तीन बातें कहना चाहता हूँ क्योंकि मुझे पता है कि आप इसे आज रात नहीं पढ़ेंगे। या हो सकता है कि आप इसे पढ़ें, लेकिन भगवान आपका भला करे, आप जानते हैं, इसे उठाएँ और आज रात इसे पढ़ें। लेकिन हो सकता है कि आप इसे न पढ़ें।

तो, मैं आपके जीवन में आपकी मदद करने के लिए तीन बातें बताने जा रहा हूँ। तो, ऐसा करने से पहले, क्या आपके पास फ्रेडरिक श्लेयरमेकर के बारे में कोई सवाल है? किताब के बारे में थोड़ी बात करने से पहले? उसके बारे में कोई सवाल? तो, हम ठीक चल रहे हैं ? ठीक है। अब आप में से कोई भी व्यक्ति, आप जानते हैं, अपनी मर्जी से नहीं आता और जाता।

बेझिझक रहो। बस, तुम्हें पता है, ठीक है। ठीक है।

किताब के बारे में तीन बातें। ठीक है। पहली बात, वह मामला बनाने की कोशिश करता है।

अभी, मैं सिर्फ़ श्लेयरमाकर को समझा रहा हूँ। मैं ज़रूरी नहीं कि उनसे सहमत हूँ। मैं सिर्फ़ उनके द्वारा बताए जा रहे तर्क को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ, ठीक है? सबसे पहले, वे यह तर्क देने की कोशिश कर रहे हैं कि धर्म के बारे में जो सबसे महत्वपूर्ण है, वह है धार्मिक अनुभव।

यही महत्वपूर्ण है। आपको धर्म को धार्मिक अनुभव के चश्मे से समझना होगा। इसलिए हठधर्मिता, सिद्धांत और सही विश्वास धार्मिक अनुभव या ईसाई धर्म के महत्वपूर्ण पहलू नहीं हैं।

और फ्रेडरिक श्लेयरमाकर कहते हैं कि ऐसे बहुत से लोग हैं जो बिल्कुल सही सिद्धांतों को जानते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके पास बिल्कुल सही सिद्धांत हैं। वे उन्हें आपको सुना सकते हैं।

यह ईसाई धर्म नहीं है। वह कहेंगे, श्लेयरमेकर कहेंगे, ईसाई धर्म धर्म का सार है धार्मिक जीवन और धार्मिक अनुभव, ठीक है? इसलिए, वह हठधर्मिता, सिद्धांत और सही विश्वास की धारणा को चुनौती देता है। वह उस धारणा को चुनौती देता है।

अब, ऐसा करते हुए, वह जिन लोगों को चुनौती दे रहा है, उनमें से एक जॉन कैल्विन है। हमने पाठ्यक्रम में जॉन कैल्विन के बारे में बात की और बताया कि ईसाई धर्मशास्त्र और ईसाई सिद्धांत के आयोजक के रूप में जॉन कैल्विन कितने महत्वपूर्ण थे। लेकिन वह जॉन कैल्विन जैसे लोगों को चुनौती दे रहा है।

तो, ठीक है। नंबर दो, जहाँ तक किताब में है, वह धर्म के बारे में बात करता है जिसे वह भावना कहता है, ठीक है? अब, यहाँ इस कोर्स के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है। और यह शब्द है गेफुहल ।

गेफुहल शब्द का इस्तेमाल करते हैं , ठीक है? और उन्होंने कहा, गेफुहल धर्म का सार है, लेकिन यह केवल धर्म का सार नहीं है, यह ईसाई धर्म का सार है। इसलिए यदि आप ईसाई धर्म को एक शब्द में समझना चाहते हैं, तो आइए गेफुहल को समझें । अब, इस शब्द को समझने के लिए, मुझे इसकी एक परिभाषा देनी होगी।

गेफुहल की औपचारिक परिभाषा है , ठीक है? गेफुहल परिमित द्वारा अनंत की तत्काल समझ है। क्या मुझे इसे दोहराना चाहिए? ठीक है, गेफुहल । गेफुहल परिमित द्वारा अनंत की तत्काल समझ है, उद्घरण रहित।

यह उनकी गेफुहल की परिभाषा है । ठीक है, तो अब मैं जो करने जा रहा हूँ वह परिभाषा को स्पष्ट करना है। हमने परिभाषा दे दी है, चलिए परिभाषा को स्पष्ट करते हैं।

आइए इसे दूसरे शब्दों में कहें। श्लेयरमाकर के लिए, गेफुहल का अर्थ है एक व्यक्ति द्वारा ईश्वर की तत्काल अनुभूति। यह विश्वास करने वाले, व्यक्ति द्वारा ईश्वर की तत्काल अनुभूति है।

और श्लेयरमाकर के लिए, यही धर्म का सार है। यही सब कुछ है। और यही ईसाई धर्म का सार है।

यही सब कुछ है। श्लेयरमेकर ने कहा कि इस दुनिया में हर व्यक्ति को ईश्वर की तत्काल समझ हो सकती है, ईश्वर की तत्काल समझ हो सकती है, ठीक है? श्लेयरमेकर के लिए इसका कभी-कभी क्या मतलब होता है? इसका मतलब है कि आपको चर्च या बाइबल जैसे किसी मध्यस्थ की ज़रूरत नहीं है। आप ईश्वर को खुद समझ सकते हैं।

यह व्यक्ति द्वारा ईश्वर के प्रति तत्काल बोध हो सकता है। और कभी-कभी , वह चर्च की आलोचना करता है, और कभी-कभी वह बाइबल की आलोचना करता है। इसलिए, आपको किसी मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं है।

ईश्वर को समझने के लिए आपको किसी पुजारी या मंत्री की ज़रूरत नहीं है। नहीं, आप ईश्वर को सिर्फ़ खुद ही समझ सकते हैं। तो यह दूसरी बात है, यह समझना कि गेफुहल क्या है।

ठीक है, और तीसरी बात, किताब के बारे में तीसरी बात, और वह यह है कि, बेशक, आप जानते हैं कि हम यहाँ कहाँ जा रहे हैं, लेकिन बेशक, धार्मिक अंतर्ज्ञान श्लेयरमेकर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। धार्मिक अंतर्ज्ञान, सहज ज्ञान, सहज ज्ञान से आप ईश्वर को जान सकते हैं। और इसलिए वह अपना सारा जोर इस धार्मिक अनुभव पर देता है।

तो यही मुख्य शब्द है, अनुभव, ठीक है? ज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव। तो शायद कार्ल बार्थ सही थे। शायद श्लेयरमेकर अपनी किताब और दूसरी किताबों के ज़रिए जो कर रहे हैं, वह पूरे ईसाई

जहाज़ को हठधर्मिता, सिद्धांत, चर्च और सही विश्वास से मोड़कर, उसे किस ओर मोड़ना है? अनुभव की ओर, अंतर्ज्ञान की ओर।

तो यही किताब की ताकत है, और उनका वहां बहुत प्रभाव था। तो, फ्रेडरिक श्लेयरमाकर। अब, इससे पहले कि हम उन्हें छोड़ दें, क्या आपके पास श्लेयरमाकर के बारे में कोई सवाल है? अलविदा, दोस्तों। आपका दिन शुभ हो।

क्या फ्रेडरिक श्लेयरमेकर के बारे में कोई सवाल है? परिचय के तौर पर विदा लेने से पहले? ठीक है, मैं एक और बात कहना चाहता हूँ: परिचय। फिर, मैं आपको 10 सेकंड का छोटा ब्रेक दूंगा। मैं अपने छात्रों को पाँच या 10 सेकंड का थोड़ा ब्रेक देता हूँ, ताकि वे इसका आनंद उठा सकें। तो, ठीक है, तो क्यों न हम ऐसा करें? ठीक है, अब, श्लेयरमेकर के बाद, यह सब पृष्ठभूमि के तौर पर है, इसलिए हम अभी भी पृष्ठभूमि में हैं।

श्लेयरमाकर का अनुसरण करने का मतलब था उस चीज़ का उदय जिसे हम शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद कहते हैं। इसलिए शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने श्लेयरमाकर और उनके जैसे लोगों का अनुसरण किया। मेरा मतलब है, वह इस सब के जनक थे, लेकिन अन्य लोग भी आए और इस तरह की सोच विकसित की। लेकिन शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद का उदय हुआ, और यह बढ़ा, और इसलिए इसकी पाँच तरह की विशेषताएँ हैं।

मुझे कुछ बातें बताने दीजिए, फिर हम थोड़ा ब्रेक लेंगे, और फिर हम अपनी बात खत्म करेंगे। ठीक है, नंबर एक, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद धार्मिक रूढ़िवाद की प्रतिक्रिया थी। और शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने जो किया वह धार्मिक रूढ़िवाद पर लगातार प्रतिक्रिया करना था।

जहाँ भी किसी तरह की रूढ़िवादिता पर संदेह किया जाता है, एक तरह की रूढ़िवादिता जो चर्च को मजबूती से पकड़े रहती है या बाइबल को मजबूती से पकड़े रहती है या हठधर्मिता को मजबूती से पकड़े रहती है, किसी भी तरह की धार्मिक रूढ़िवादिता, उदारवाद हमेशा उसी की प्रतिक्रिया थी। उदारवाद हमेशा उस तरह की धार्मिक रूढ़िवादिता या हमारे मामले में, ईसाई रूढ़िवाद को चुनौती देता रहा है। इसलिए उदारवाद के उदय के मामले में यह नंबर एक है।

ठीक है, नंबर दो उदारवाद की विधि है। इन लोगों ने किस विधि का उपयोग किया? वे क्या करने की कोशिश कर रहे थे? ठीक है, उन्होंने जो करने की कोशिश की वह ईसाई धर्म को फिर से बताना था। हमें ईसाई धर्म पर फिर से विचार करना होगा।

हमें ईसाई धर्म को इस तरह से फिर से बताना होगा कि आधुनिक पुरुष और महिलाएं इसे समझ सकें। और आधुनिक से उनका मतलब, ज़ाहिर है, 19वीं सदी, 20वीं सदी से था। इसलिए, आधुनिक महिलाओं को समझने के लिए हमें ईसाई धर्म को फिर से बताना होगा।

हमें ईसाई धर्म को पुनः व्यवस्थित करना होगा। हमें इसे पुनः कहना होगा। हमें इस पर पुनः विचार करना होगा।

और हमें इस पर इस तरह से पुनर्विचार करना होगा कि यह 19वीं सदी के लोगों के लिए समझदारी भरा हो। और इसलिए उन्होंने जो किया, और जिस तरह से उन्होंने ऐसा किया, उनमें से एक तरीका यह था कि उन्हें लगा कि उन्हें ईसाई धर्म को बौद्धिक रूप से स्वीकार्य बनाना होगा क्योंकि उन्हें लगा कि अगर यह बौद्धिक रूप से स्वीकार्य नहीं है, अगर यह लोगों के दिमाग तक नहीं पहुंचता है, तो इसका उनके जीवन पर कभी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद एक बहुत बड़ा बौद्धिक आंदोलन बन गया, एक बौद्धिक आंदोलन जिसने संस्कृति, सामान्य संस्कृति को प्रभावित किया।

तो, यह बहुत महत्वपूर्ण था। तो मैं बस एक और बात का जिक्र करूंगा, फिर मैं आपको एक और बात बताऊंगा, पाँच में से एक और। हालाँकि, तीसरी बात यह है कि आपको कभी भी सिर्फ अधिकार के आधार पर धर्म को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

चर्च का अधिकार, स्थानीय पादरी का अधिकार, स्थानीय मंत्रालय का अधिकार, किसी सिद्धांत का अधिकार। आपको केवल उस अधिकार के आधार पर धार्मिक अनुभव को कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए। प्रोटेस्टेंट उदारवादियों का मानना था कि आप सक्षम हैं। आप ईश्वर द्वारा आपको दिए गए तर्क के आधार पर सत्य और असत्य में अंतर करने में सक्षम हैं।

तो, एक अर्थ में, अधिकार आपकी अपनी तर्क करने की क्षमता है, खुद के लिए सोचना, खुद के लिए तर्क करना कि क्या सच है और क्या झूठ है। चर्च का अधिकार, एक पादरी का अधिकार, एक मंत्री का अधिकार, एक सिद्धांत का अधिकार। नहीं, इसे यूँ ही स्वीकार न करें।

खुद ही सोचिए: क्या सच है और क्या झूठ? तो, यह शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद की तीसरी विशेषता है। तो, मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ।

मुझे अपने लोगों को यहाँ थोड़ा ब्रेक देने की ज़रूरत है। इसलिए, हम उन्हें थोड़ा समय और ब्रेक देते हैं। शायद विशेष रूप से सोमवार को, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि उनमें से कुछ लोग काफी क्लिक कर रहे हैं और लिख रहे हैं।

क्या आप लोगों के पास इस कोर्स और सब कुछ, सुधार से लेकर वर्तमान तक के बारे में कोई सवाल है? हम अब 19वीं सदी में पहुंच चुके हैं, इसलिए हम आगे बढ़ रहे हैं। हम बुधवार को मिलते हैं। बुधवार को, हम इस कोर्स में जो करते हैं, वह आमतौर पर शुक्रवार को होता है, लेकिन इस सप्ताह शुक्रवार को कोई कक्षा नहीं है।

उस दिन, हम सिर्फ पाठ्यपुस्तकों के साथ मिले और उनके बारे में बात की। हम व्याख्यान नहीं देते। हम वास्तव में सिर्फ पाठ्य सामग्री और उसमें जो कुछ भी हम पढ़ रहे हैं उस पर काम करते हैं और बाकी सब कुछ।

तो, मैंने कहा, गाइ, मत भूलना कि हम बुधवार को लायन्स डेन में हैं, और तुम अपने सवाल लेकर आ सकते हो। मुझे पहले से उनकी ज़रूरत नहीं है। और बस इतना याद रखना कि अपने साथ पाठ्यपुस्तकें भी लाना।

तो हाँ, यहाँ सभी लोग हैं, इसलिए हमें इससे कोई परेशानी नहीं है। जब आप लोग स्ट्रेचिंग या आराम कर रहे हों, तो क्या किसी के पास कोई सवाल है? ठीक है। मैंने कहा कि पाँच विशेषताएँ थीं।

मैं इस प्रोटेस्टेंटवाद को चार और पांच नंबर देता हूँ, जो हमारे सामने आ रहा है। ठीक है, नंबर चार। उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद, हम इसे क्या कह रहे हैं? हम 19वीं सदी में उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद के उदय को बुला रहे हैं।

इसमें ये विशेषताएँ हैं। तो, ठीक है, नंबर चार। प्रोटेस्टेंट उदारवाद, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद, ने यह रुख अपनाया कि सभी सत्य ईश्वर का सत्य है।

इसलिए जो कुछ भी सत्य है वह ईश्वर की ओर से है। ऐसा कहने के बाद, शास्त्रीय उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद वैज्ञानिक सत्य के प्रति खुला था। अगर यह वैज्ञानिक रूप से सत्य है, तो यह ईश्वर की ओर से ही होना चाहिए।

अब, इसने 19वीं सदी में एक बड़ी बहस को जन्म दिया क्योंकि 1859 में, डार्विन ने अपनी पुस्तक ओरिजिन ऑफ स्पेशीज प्रकाशित की। फिर, चर्च ने विकास में पक्ष लेना शुरू कर दिया। अब, डार्विन और विकास के बारे में शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट दृष्टिकोण यह था कि यदि यह सत्य है और यह वैज्ञानिक रूप से सत्य साबित हुआ है, तो मैं इसे स्वीकार करूँगा क्योंकि सभी सत्य ईश्वर से हैं।

इसलिए, उन्हें धार्मिक सत्य और वैज्ञानिक सत्य के बीच कोई अंतर नज़र नहीं आया। और यही बात बाइबिल आलोचना के साथ भी हुई। बाइबिल आलोचना पिछली सदी में, वास्तव में 18वीं सदी में उभरी, लेकिन यह वास्तव में 19वीं सदी में भी विकसित हो रही है।

बाइबिल की आलोचना बाइबिल के करीब पहुंचने का एक तरीका है। किसने लिखा? उन्होंने कब लिखा? उन्होंने क्यों लिखा? इन सब और हर चीज का अर्थ क्या है? लेकिन वे बाइबिल की आलोचना को बहुत स्वीकार करते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि अगर बाइबिल की आलोचना और ऐतिहासिक आलोचना, अगर वे सच हैं, अगर ये सच हैं, तो हमें उन्हें स्वीकार करना चाहिए। हमें उन्हें ईसाई धर्म के विपरीत नहीं देखना चाहिए।

इसलिए, सभी सत्य को ईश्वर का सत्य मानने की प्रवृत्ति थी। इसमें वैज्ञानिक सत्य भी शामिल था, और इसमें ऐतिहासिक बाइबिल संबंधी आलोचनात्मक सत्य भी शामिल थे। इसलिए, एक अर्थ में, उनमें से कई लोग उस चीज के निर्माता थे जिसे हम बाइबिल संबंधी आलोचना कहते हैं।

तो यह चौथा नंबर था, सभी सत्य को ईश्वर का सत्य मानना। यह उदारवाद की एक तरह की पहचान बन गई। ठीक है, नंबर पांच, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद, का दो दिशाओं में प्रभाव था।

तो मैं उन दो दिशाओं का जिक्र करना चाहूँगा। और इसका दो दिशाओं में शक्तिशाली प्रभाव पड़ा। एक तरफ़, इसने चर्च के दक्षिणपंथी पक्ष और चर्च के ज़्यादा रूढ़िवादी पक्ष को प्रभावित किया।

इसने चर्च के कट्टरपंथी विंग, इंजील विंग को प्रभावित किया। और इसने ऐसा कैसे किया? इसने धार्मिक अनुभव पर जोर देकर, हृदय के अनुभव, विश्वासी के अनुभव पर जोर देकर ऐसा किया, बिना किसी मध्यस्थ की आवश्यकता के। यह कुछ ऐसा है जिसे ईसाई धर्म के दक्षिणपंथी विंग ने अपनाया।

तो यह कुछ ऐसा है जिसे पुनरुत्थानवाद ने उठाया: आस्तिक का अनुभव। इसलिए यह बहुत दिलचस्प है कि शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने वास्तव में अनुभव के बारे में बात करके चर्च के अधिक रूढ़िवादी इंजीलवादी कट्टरपंथी विंग पर प्रभाव डाला। और इसे चर्च के अधिक रूढ़िवादी तत्वों ने अपनाया।

अब, चर्च वास्तव में उस संबंध को नहीं देख पाएगा। वे वास्तव में उन बिंदुओं को जोड़ नहीं पाएंगे। लेकिन वास्तव में, उदारवाद के अनुभव पर जोर देने की शक्ति, ईसाई अनुभव, चर्च के दक्षिणपंथ में बहुत महत्वपूर्ण हो गई।

बहुत दिलचस्प है। पुनरुत्थानवादियों की ओर से इस पर पहले से ही ज़ोर दिया जा रहा है। यह एक अच्छी बात है।

लेकिन वे इस पर इतना ज़ोर क्यों दे रहे हैं? वे इसे कहाँ से प्राप्त कर रहे हैं? मेरा मतलब है, प्रोटेस्टेंट उदारवाद श्लेयरमेकर से पहले शुरू हुआ था, लेकिन वह ही है जिसने इसे एक साथ लाया। लेकिन क्या वे सुनवाई, चर्चा और धार्मिक अनुभव के महत्व से उस ज़ोर का कुछ हिस्सा प्राप्त कर रहे हैं? क्या वे उसमें से कुछ प्राप्त कर रहे हैं? या, और यह एक अच्छा सवाल है, जैसी, क्या वे खुद धार्मिक अनुभव पर अपने ज़ोर से, धार्मिक अनुभव के लिए उदारवाद के आह्वान को प्रभावित कर रहे हैं? शायद यह दोनों तरफ़ से काम करता है। शायद बातचीत एक तरह से दोनों तरफ़ जा रही है।

मुझे लगता है कि विडंबना यह है कि दाईं ओर के लोगों ने कभी नहीं पहचाना होगा कि, लड़के, हम प्रोटेस्टेंट उदारवाद से थोड़ा प्रभावित हो सकते हैं, कि यह एक संभावना है। मुझे लगता है कि वे थे, लेकिन उन्होंने इसे भी प्रभावित किया हो सकता है। ठीक है, तो यह एक तरीका है जिससे उन्होंने इसे प्रभावित किया, ठीक है? ठीक है, दूसरा तरीका जिससे उन्होंने चर्च और व्यापक संस्कृति को प्रभावित किया, वह ईसाई धर्म के बाएं हिस्से को भी प्रभावित करके था।

न केवल उन्होंने पुनरुत्थानवाद या रूढ़िवादी ईसाई धर्म को प्रभावित नहीं किया, बल्कि उन्होंने वामपंथी विचारधारा को भी प्रभावित किया। ठीक है, अब कभी-कभी, और विशेष रूप से, उर्फ़, विशेष रूप से वाल्टर रौशनबुश नाम के एक व्यक्ति की शिक्षाएँ, एक और अच्छा जर्मन, लेकिन वह संयुक्त राज्य अमेरिका में रहता था, इसलिए, लेकिन वाल्टर रौशनबुश। अब, वाल्टर रौशनबुश एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति हैं और सुधार से लेकर वर्तमान तक चर्च के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उनका भी एक लेबल है। चलिए मैं आपको उनका लेबल बताता हूँ। मुझे लगता है कि कभी-कभी हमें इन लेबलों से सावधान रहना चाहिए, और हम लोगों को सिर्फ़ बक्सों में नहीं रखते; वाल्टर रौशनबुश का भी एक लेबल था।

उन्हें सामाजिक सुसमाचार आंदोलन का जनक कहा जाता था, और मेरे पास यहाँ रौशनबुश की एक तस्वीर है। ये उनकी तिथियाँ हैं, 1861, 1918, ठीक है? अब, सामाजिक सुसमाचार आंदोलन ने न केवल आस्तिक के अनुभव और आस्तिक के धार्मिक अनुभव पर जोर दिया, बल्कि सामाजिक सुसमाचार आंदोलन ने अनुभव की उस समझ को लिया और उसे समुदाय से जोड़ा, यानी चर्च से। इसलिए सामाजिक सुसमाचार आंदोलन चर्च का जीवन है, लेकिन यह गरीबों की देखभाल करने वाला चर्च का जीवन है।

यह चर्च का जीवन है, ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना। इसलिए सामाजिक सुसमाचार आंदोलन चीजों के बाएं पक्ष पर था, एक अर्थ में ईसाई धर्म का वामपंथी पक्ष, लेकिन वाल्टर रौशनबुश के इस पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है। वाल्टर रौशनबुश ने सामाजिक सुसमाचार, यानी गरीबों की देखभाल, को व्यक्ति के विश्वास की आवश्यकता के साथ संतुलित किया।

इसलिए, वाल्टर रौशनबुश ने गरीबों की देखभाल और व्यक्तिगत आस्तिक के विश्वास के बीच संतुलन बनाया। इसलिए वह पुनरुत्थान के विरोधी नहीं थे। वह व्यक्तिगत ईसाई अनुभव के विरोधी व्यक्ति नहीं थे, और वास्तव में, वह 19वीं सदी के सबसे महान पुनरुत्थानवादी चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी के मित्र थे।

इसलिए, जब हम वाल्टर रौशनबुश के बारे में बात करते हैं तो हमें सावधान रहना चाहिए क्योंकि हमें सावधान रहना चाहिए कि हम यह न कहें कि, ओह, ठीक है, वह अपने सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के साथ उदारवाद के बाएं पक्ष में था, और उसे आस्तिक या ईसाई धर्मांतरण या किसी भी चीज़ के जीवन के बारे में कुछ भी पता नहीं था। वाल्टर रौशनबुश की सबसे बड़ी जीवनी, वाल्टर रौशनबुश के सबसे बड़े जीवनीकार, वास्तव में उन्हें एक इंजीलवादी के रूप में लेबल करते हैं। तो, वहाँ वाल्टर रौशनबुश है।

लेकिन किसी भी मामले में, उदारवाद ने सामाजिक प्रक्रिया के संदर्भ में, सामाजिक भागीदारी के संदर्भ में, दुनिया के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव के संदर्भ में, चर्च के संदर्भ में ईसाई धर्म के वामपंथी पक्ष को प्रभावित किया, न कि केवल व्यक्तियों का एक समूह बल्कि एक समुदाय जो गरीबों की देखभाल करता है। तो, इसने वास्तव में इसे प्रभावित किया, और वाल्टर रौशनबुश यहाँ सबसे महत्वपूर्ण नाम है। ठीक है, मुझे बताएं। क्या आपके पास रौशनबुश के बारे में कोई प्रश्न है? तो, वह एक ऐसा नाम है जिसे जानना ज़रूरी है।

ठीक है, बस इतना ही कि आपको पता चल जाए कि हम यहाँ कहाँ जा रहे हैं, और फिर मैं आपको जाने दूँगा। लेकिन अब से, फिर हम अगले सोमवार से क्या करने जा रहे हैं, यह अगले सोमवार को होगा, क्योंकि बुधवार को हम मिलेंगे, मैं इस बारे में एक ईमेल भेजने की कोशिश करूँगा, वैसे, लेकिन बुधवार को हम मिलेंगे, लायन डेन, नाश्ता, लायन डेन। लेकिन अगले सोमवार को हम उदारवाद के बुनियादी धार्मिक निष्कर्षों से शुरुआत करेंगे।

यह सब आखिर कहां जाकर खत्म हुआ? और फिर हम इस पर एक अच्छी नज़र डालना चाहते हैं। हम यह कहना चाहते हैं कि, क्या इसमें ताकत थी? क्या इसमें कमज़ोरियाँ थीं? हाँ, मुझे लगता है कि दोनों ही थीं। इसलिए, हम इस पर एक नज़र डालना चाहते हैं।

लेकिन हम उस स्थिति में हैं जहाँ हमें व्याख्यान में होना चाहिए, इसलिए हम आज इसे शुरू करने वाले हैं, इसलिए हम अच्छी स्थिति में हैं। ठीक है। आपका दिन शुभ हो।

दोस्तों, आज हमारे साथ जुड़ने के लिए आपका धन्यवाद। हमें आपका स्वागत करते हुए खुशी हो रही है, और आप एक घंटे तक हमारे साथ रहे। तो यह बहुत बढ़िया है।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 15 है, द राइज़ ऑफ़ लिबरलिज़्म।